B.A. III (Hon's)
Paper - VI Section - B

Topic — Democracy लोकतंत्र

आधुनिक विश्व में प्रचलित शासन प्रणालियों में लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। लोकतंत्र वस्तुतः शासन का स्वरूप ही नहीं है अपितु राज्य का एक प्रकार और समाज की एक व्यवस्था है। लोकतंत्र केवल सरकार का स्वरूप नहीं है ऐसा भी नहीं है कि लोकतंत्र पहले सरकार का स्वरूप हो और बाद में कुछ और। लोकतंत्रात्मक सरकार के लिए लोकतंत्रात्मक राज्य का होना अनावश्यक है। लोकतंत्र (Democracy) शब्द लैटिन भाषा के दो शब्दों Demos और Cratia से व्युत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ क्रमशः 'जनता' और 'शक्ति' है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार लोकतंत्र को जनता का शासन माना जाता है। अब्राहम लिंकन के अनुसार लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है। ब्राइस के अनुसार लोकतंत्र शासन का वह प्रकार है जिसमें शासन शक्ति किसी विशेष वर्ग अथवा वर्गों में निहित न होकर सम्पूर्ण समाज के सदस्यों में निहित हो। सीले के अनुसार लोकतंत्र वह शासन है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रतिभागी होता है। डायसी की दृष्टि में लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें शासक, समुदाय सम्पूर्ण राष्ट्र का अपेक्षाकृत एक बड़ा भाग हो। इन परिभाषाओं पर विचार करने से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि लोकतंत्र का आधार समानता है तथा जाति, रंग, लिंग, सम्पत्ति अथवा

Scanned with CamScanner

धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। लोकतंत्रात्मक राज्य के अभाव में लोकतंत्रात्मक सरकार की स्थापना भी संभव नहीं है परन्तु लोकतंत्रात्मक राज्य के लिए लोकतंत्रात्मक सरकार का होना अनिवार्य नहीं है क्योंकि ऐसे राज्य में सरकार लोकतंत्रीय निरंकुश अथवा राजतंत्रीय किसी भी प्रकार की हो सकती है। लोकतंत्रीय समाज में समानता और बंधुत्व की भावना प्रधान होती है इसलिए ऐसा कहा जाता है और ठीक ही कहा जाता है कि लोकतंत्र एक ऐसी जीवन पद्धति है जिसमें न्यूनतम बल प्रयोग या दबाव से व्यक्ति की स्वतः प्रेरित स्वतंत्र बुद्धि और उसके कार्य कलाप का मेल बैठाया जा सके और यह विश्वास है कि ऐसी पद्धति सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आदर्श पद्धति होगी जो मनुष्य की प्रकृति और विश्व की प्रकृति के साथ अधिकतम सामंजस्य कायम करेगी।

आरम्भ में लोकतंत्र के संयमित स्वरूप को सबसे बेहतर व्यवस्था माना था आज के विकसित युग में अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र ही आवश्यक शासन प्रणाली है व्यापक दृष्टिकोण से देखने पर लोकतंत्र को एक राजनीतिक अवस्था एक नैतिक संकल्पना और एक सामाजिक परिस्थिति कहा जा सकता है। लोकतंत्र इस बात की कोशिश करता है कि

एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित की जा सके जिसमें व्यक्तित्व का विकास हो सके। लोकतंत्र के पक्ष में तीन प्रकार की दलीलें दी जाती हैं—

(i) प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धांत और

(ii) उपयोगितावादी तर्क

(iii) आदर्शवादी तर्क

प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांतों में आस्था रखने वाले विचारकों का मत है कि सभी मनुष्य प्राकृतिक रूप से स्वतंत्र उत्पन्न हुए हैं। राजनीतिक सत्ता के रूप को समझने के लिए हमें समस्त व्यक्तियों के प्राकृतिक नियमों के अनुसार किसी दूसरे पर निर्भर न रहकर अपनी इच्छानुसार अपने कार्यों की व्यवस्था करने तथा अपने सम्पत्ति एवं शरीर का उपयोग करने की प्राकृतिक एवं मौलिक स्वतंत्रता को स्वीकार करके आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य की पूर्ण स्वतंत्रता के आधार पर जो उसे प्राकृतिक अवस्था में प्राप्त थी एक राजनीतिक समाज की प्रतिष्ठा हो सकती है जिसमें जनता अपने आप को राजनीतिक समाज में संगठित कर लेती है जिसमें बहुमत को शेष लोगों के लिए कार्य करने का अधिकार रहता है। उपयोगितावादी विचारकों के अनुसार राजनीतिक समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य सभी मनुष्यों के व्यक्तिगत कल्याण की स्थापना करना है। समाज का राजनीतिक संगठन

यह अधिकतम व्यक्तियों के हितों की अभिवृद्धि, अधिकारों की सुरक्षा और सुख के साधनों का विस्तार करे। लोकतंत्र गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास एवं समानता की स्थापना करता है। आदर्शवादी विचारकों की दृष्टि में यह सामान्य व्यक्तियों के चरित्र और बुद्धि को क्रियाशील बनाता है। वह ऐसे गुणों की स्थापना करता है जिनसे व्यवस्था की स्थापना, सुरक्षा की रक्षा, शारीरिक सुख सुविधा की प्राप्ति, शिक्षा एवं संस्कृति के संसाधनों की प्राप्ति आदि लक्ष्यों की प्राप्ति में आसानी रहती है।

लोकतंत्र साधारण व्यक्ति को सार्वजनिक समस्याओं के सार्वजनिक हल ढूँढने में सरकार से सहयोग करने का आमंत्रण देता है ———— इसलिए कहा जाता है कि जनभी प्रकार का शासन शिक्षा प्रदान करने की पद्धति है पर शासन शिक्षा ही सबसे अच्छी शिक्षा है इसलिए सबसे अच्छा शासन स्वशासन है और स्वशासन ही लोकतंत्र है। लोकतंत्र जनता का नैतिक उत्थान करता है। लोकतंत्र स्वावलंबन और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना को सबसे अधिक महत्व देता है।

व्यावहारिक दृष्टि से लोकतंत्र देशप्रेम की भावना को बढ़ाता है। मताधिकार के कारण जनता शासन में सक्रिय भाग लेती है। यह ~~शक्ति~~ शक्ति की अपेक्षा विचार विमर्श को महत्व प्रदान करता है। लोकतंत्र समानता के सिद्धांत

पर आधिर आधारित होता है जिससे सामाजिक विरोध का अंत हो जाता है तथा प्रतिभा के साथ अन्याय नहीं होता है इसकी तरह की उत्तम व्यवस्थाओं में सामान्यतया सामाजिक असमानता और सामाजिक असंतोष रहता है बड़ी अवस्था पाने पर क्रांति का रूप धारण कर लेता है किंतु लोकतंत्र में ऐसा संभावना कम होती है

लेकिन लोकतंत्र को भी पूर्ण रूप से संतोषजनक नहीं माना जा सकता है और यही कारण है कि बहुत से विचारकों की दृष्टि में लोकतंत्र उत्तरदायित्व विहीन भीड़ का शासन है

अरस्तु के अनुसार लोकतंत्र संवैधानिक शासन का भ्रष्ट रूप है इसमें बहुसंख्यकों की निरंकुशता रहती है लोकतंत्र स्वतंत्रता के विरुद्ध है इसमें प्रशिक्षण विवेकपूर्ण निर्णय और विशेषज्ञता को बहुत कम महत्व दिया जाता है साथ ही साथ संख्या पर अत्यधिक बल दिया जाता है इसमें ~~लोगों~~ लोगों के सिर ही गिने जाते हैं मत बात की चिंता नहीं की जाती कि इनके खोपड़ियों में क्या है। इसमें बार-बार चुनाव का सामना करना पड़ता है और यही कारण है कि इसमें भीड़ मनोवृत्ति को पूरा पूरा अवसर दिया जाता है यह दुष्ट लोगों का कुलीनतंत्र है मत देने में भी उदासीनता रहती है राजनीतिक दलबंदी से अनेक बुराइयाँ पैदा होती हैं इसमें भ्रष्टाचार और अन्याय को बढ़ावा मिलता है राष्ट्रीय विवादों को स्थानीय चुनावों में मुद्दा बना दिया जाता है लूट खसोट की प्रथा पनपती है

Scanned with CamScanner

28.06.2011

नैतिक मानदंडो का पतन होता है

लोकतंत्र नकारात्मक स्थितियों का शासन है इसका आधार बहुत कमजोर होता है इसका आधार सामान्य जन है जो अशिक्षित तथा भावुक होती है तथा भावना की बाढ़ में बह जाती है वे सहज ही विश्वास करने वाले लोग होते हैं जिन्हे अगर मूर्ख कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। लोकतंत्र विकास की प्रक्रिया से मेल नहीं खाता। विकास के क्रम में अधिकार विभु के हाथ होता जाता है जबकि लोकतंत्र में विकेंद्रीकरण होता है लोकतंत्र अत्यंत खर्चीली शासन प्रणाली है लोकतंत्र में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है इसमें जनता की चापलूसी की जाती है

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रचलित प्रणालियों में लोकतंत्र सबसे अच्छी प्रणाली है इसमें जनता की शासन की भागीदारी होती है इसमें स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व पर विशेष बल दिया जाता है राज्य कल्याणकारी संस्था का कार्य करता है समाज का निम्नतम व्यक्ति भी उच्चतम पद प्राप्त कर सकता है इस प्रकार लोकतंत्र उपयोगी है